SMT. SHANTI DEVI

Smt. Shanti Devi is an eminent Mithila (Madhubani) painting artist from Laheriaganj, Bihar, who is known for her outstanding contribution to Godna style of Mithila painting.

2. Born on 4th March, 1958, in a poor Dalit family, Smt. Shanti faced societal challenges, discrimination, and economic hardship. Despite the obstacles, she became a pioneer in the Godna style of Mithila painting. Her journey started against the backdrop of post-independence India, marked by persistent casteism and feudalism. Despite societal resistance, she pursued education, overcoming scorn and discrimination. Her pursuit of knowledge eventually led her to become a teacher, breaking societal norms. Later, she transitioned to Mithila painting, initially facing challenges due to her Dalit background. Collaborating with other artists, she pioneered the unique Godna style, blending traditional elements with expressive devices, metaphors and symbols. Her art gained attention nationally and internationally, with exhibitions and recognition for her innovative contributions. Her art gained recognition in Patna and beyond, with Upendra Maharathi playing a pivotal role in promoting her work. Her paintings received accolades, and in 1979-80, she was honoured with the State Award by the Government of Bihar. This recognition paved the way for international acclaim, with an American enthusiast, Raymond Lee Boens, supporting her art and producing a documentary about her life.

3. Smt. Shanti's art not only depicted traditional subjects but also expanded to include themes from Buddha's life, Ambedkar's various mental states, and events from Ramayana and Mahabharata. She participated in exhibitions worldwide, leaving a lasting impression with her fresh and aesthetically rich paintings. She not only sustains her family through painting but also empowers other girls by providing training and skills.

4. In 1984, the Government of India bestowed Smt. Shanti with the National Award for her outstanding contributions to Godna Style of Mithila painting.

श्रीमती शान्ति देवी

श्रीमती शान्ति देवी, लहेरियागंज, बिहार, मिथिला (मधुबनी) पेंटिंग की प्रतिष्ठित कलाकार है जिन्हें मिथिला पेंटिंग की गोदना शैली में उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए जाना जाता है।

2. 4 मार्च, 1958 को एक गरीब दलित परिवार में जन्मी, श्रीमती शान्ति को सामाजिक चुनौतियों, भेदभाव और आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। सब प्रकार की बाधाओं के बावजूद, उन्होंने मिथिला पेंटिग की गोदना शैली को आगे बढ़ाया। इस क्षेत्र में उनकी यात्रा की शुरुआत स्वतंत्र भारत के बाद की पृष्ठभूमि में हुई जब जातिवाद और सामंतवाद व्याप्त था। सामाजिक विरोध के सम्मुख उन्होंने घृणा और भेदभाव की परवाह नहीं की और अपनी शिक्षा जारी रखी। शिक्षा के प्रति उनकी रुचि ने उन्हें सभी सामाजिक नियम–कायदों को तोड़ते हुए एक शिक्षक बनने के लिए प्रेरित किया। बाद में उन्होंने मिथिला पेंटिंग के क्षेत्र में कदम रखा जहाँ आरंभ में उन्हें अपनी दलित पृष्ठभूमि के कारण चुनौतियों का सामना करना पड़ा। अन्य कलाकारों के साथ कार्य करते हुए, उन्होंने परंपरागत तत्वों, मुखर युकितयों, रूपक और प्रतीकों को साथ मिलाले हुए विशिष्ट गोदना शैली विकसित की। उनकी कला को प्रदर्शनियों के माध्यम से राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ख्याति मिली और उनके नवीन योगदान के लिए उन्हें सराहा गया। उनकी कला को पटना और उसके बाहर भी प्रसिद्धि मिली और उपेंद्र महारथी ने उनकी कला को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनकी पेंटिंग को प्रशंसा मिली और वर्ष 1979–80 में उन्हें बिहार सरकार द्वारा राज्य पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इस प्रसिद्धि ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उनकी सराहना का मार्ग प्रशस्त किया। उनके एक अमेरिकी प्रशंसक, रेमंड ली बोइन्स ने उनकी कला में सहयोगी की भूमिका निभाते हुए, उनके जीवन पर एक वृत्तचित्र बनाया।

3. श्रीमती शान्ति की कला में न केवल परंपरागत विषयों का चित्रण किया गया है बल्कि उसमें बुद्ध के जीवन प्रसंग, अम्बेडकर की विभिन्न मानसिक स्थितियों और रामायण तथा महाभारत के कथानक शामिल है। उन्होंने विश्व भर की प्रदर्शनियों में भाग लिया और अभिनव और सौदंर्य से परिपूर्ण चित्रकारी से एक अमिट छाप अंकित की। वह, पेंटिंग के माध्यम से न केवल अपने परिवार का भरण–पोषण कर रही हैं बल्कि प्रशिक्षण और कौशल प्रदान करके अन्य बालिकाओं को भी सशक्त बना रही हैं।

4. वर्ष 1984 में, भारत सरकार ने श्रीमती शान्ति को मिथिला पेंटिंग की गोदना शैली में उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया।

SHRI SHIVAN PASWAN

Shri Shivan Paswan is a luminary in the realm of art and has left an indelible mark on the canvas of Mithila art.

2. Born on 4th March, 1956, into a family battling extreme poverty, Shri Paswan's early education faced hurdles due to financial constraints. Nevertheless, he persevered through adversity, showcasing resilience and determination. Despite the challenges, his journey took a transformative turn when he discovered Mithila art during a severe famine. The traditional art form, previously confined to walls and ground, became a means of livelihood for the struggling community, marking the beginning of his artistic odyssey.

3. Shri Paswan's artistic journey began with Mithila paintings, challenging societal norms by bringing this art form to paper and cloth. He sought to empower women through employment in the Mithila art sector, transitioning from traditional depictions to exploring new themes. His encounter with Upendra Maharathi opened doors to the Institute of Industrial Design, where his talent flourished. He ventured beyond conventional motifs, weaving tales of Raja Salhesh, Dina-Bhadri and Mahatma Buddha into his artwork. He pioneered the "Godana painting" style of Mithila painting.

4. Shri Paswan's commitment to art extended beyond paintings, as he became a catalyst for cultural preservation. His artistic expressions evolved, incorporating diverse mythological characters and reflecting the essence of his community. His artwork, displayed in Bihar Museum, became a testament to his dedication and innovation, contributing to the resurgence of Mithila art on a national and international scale. Despite facing personal and societal challenges, he remained dedicated to his craft. His distinct Godna style, inspired by traditional practices, gained recognition for its raw and unique portrayal of everyday life. His impact extended beyond his canvases; he transformed Laheriyaganj into an art pavilion, influencing the art scene both nationally and internationally.

5. Shri Paswan's artistic ability garnered numerous accolades, establishing him as a legendary figure in the art world. He received prestigious honours in the field. His contributions to art education stand out, as he imparts free training to underprivileged youth, fostering a new generation of artists in Madhubani and its surrounding areas. Despite facing social injustices, he and his wife, Smt. Shanti Devi, continue to dedicate themselves to the practice of art, inspiring others to overcome challenges and pursue their passions.

श्री शिवन पासवान

श्री शिवन पासवान कला क्षेत्र के सुप्रसिद्ध व्यक्ति हैं और उन्होंने मिथिला कला के क्षेत्र में अपनी अमिट छाप छोड़ी है।

2. 4 मार्च 1956 को एक घोर गरीब परिवार में जन्मे, श्री पासवान को आर्थिक कठिनाइयों के कारण अपनी प्रारंभिक शिक्षा में बाधाओं का सामना करना पड़ा। फिर भी उन्होंने दृढ़ता और संकल्प से परेशानियों के बीच रास्ता बनाया। इन सब चुनौतियों के बावजूद, उनकी इस यात्रा में एक बड़ा मोड़ आया जब उन्होंने भीषण अकाल के दौरान मिथिला कला के क्षेत्र में कार्य करना आरंभ किया। कला का यह परंपरागत रूप, जो पहले केवल दीवारों और जमीन तक ही सीमित था, अब परेशानियों से जूझते समुदाय के लिए आजीविका का साधन बन गया और यहाँ से उनकी कलात्मक यात्रा की शुरुआत हुई।

3. श्री पासवान की कलात्मक यात्रा मिथिला चित्रकारी से आरंभ हुई। उन्होंने इस कला को कागज और कपड़े पर उकेर कर सामाजिक आदर्शों को चुनौती दी। उन्होंने मिथिला कला के क्षेत्र में रोजगार देकर महिलाओं को सशक्त बनाया, जिसमें उन्होंने परंपरागत चित्रण से हटकर नए विषयों को अपनाया। इस बीच उनकी मुलाकात उपेन्द्र महारथी से हुई, जिनके माध्यम से वह इंस्टीट्यूट ऑफ इंडस्ट्रियल डिजाइन के संपर्क में आए। इससे उनकी प्रतिभा में और निखार आया। उन्होंने परंपरागत चित्रों से इतर अपनी कलाकृतियों में राजा सलहेश, दीना–भद्री और महात्मा बुद्ध की कहानियाँ शामिल की हैं। उन्होंने मिथिला पेंटिंग की"गोदना पेंटिंग" शैली को आगे बढ़ाया है।

4. श्री पासवान का कला के क्षेत्र में समर्पण चित्रकारी तक ही सीमित नहीं था, वह सांस्कृतिक संरक्षण का माध्यम बन गए थे। उन्होंने कलात्मक चित्रण में विविध पौराणिक पात्रों को शामिल किया और अपने समुदाय की पहचान को प्रस्तुत किया। उनकी कलाकृतियों को बिहार म्यूजिम में दर्शाया गया है। राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उन्होंने मिथिला कला को पुनर्जीवित करने में योगदान दिया, जो उनके समर्पण और अभिनवशीलता का प्रमाण है। व्यक्तिगत और सामाजिक चुनौतियों का सामना करने के बावजूद, वह अपने कला के प्रति समर्पित रहे। परंपरागत पद्धतियों से प्रेरित उनकी गोदना शैली को रोजमर्रा के जीवन के सरल और अनूठे चित्रण के कारण ख्याति मिली। उनका प्रभाव उनके कलात्मक कार्यों से बढ़कर था। उन्होंने लहेरियागंज को कला के केंद्र के रूप में परिवर्तित किया और राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय दोनों स्तर पर कला परिदृश्य को प्रभावित किया।

5. श्री पासवान की कलात्मक सुयोग्यता को बहुत सराहना मिली, जिसने उन्हें कला के क्षेत्र में एक दिग्गज के रूप में स्थापित किया। उन्हें इस क्षेत्र में कई प्रतिष्ठित पुरस्कार प्राप्त हुए। कलात्मक शिक्षा के क्षेत्र में उनका योगदान अग्रणी है। उन्होंने पिछड़े क्षेत्र के युवाओं को मुफ्त में प्रशिक्षण देकर मधुबनी और उसके आसपास के क्षेत्रों में कलाकारों की एक नयी पीढ़ी तैयार की। सामाजिक भेदभाव का सामना करने के बावजूद, उन्होंने और उनकी पत्नी, श्रीमती शांति देवी ने कला के प्रति समर्पण भाव से कार्य किया और दूसरों को चुनौतियों से निकालकर अपने पसंदीदा क्षेत्रों में कार्य करने के लिए प्रेरित किया।